International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-01-2026, Accepted: 08-02-2026, Published: 23-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 163-164

काव्य भाषा टूल: एवं मुक्तिबोध की कविता

लक्ष्य सिंह चौधरी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, नेहरू मेमोरियल शिव नारायण दास कॉलेज बदायूं, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भाषा जब साहित्यिक परिवर्तन के अनुरूप परिनिष्ठित और मानक रूप ग्रहण कर लेती है तब वह काव्य भाषा कहलाती है। भाषा शब्दों की साधक होती है क्योंकि शब्दों के द्वारा ही भाषा का निर्माण होता है। कवि अज्ञेय के अनुसार– "मेरी खोज भाषा की नहीं शब्दों की है।" [1]
मुक्तिबोध की काव्यभाषा का समय मुख्य रूप से नई कविता तथा प्रयोगवाद के मध्य का समय है जिस समय भाषाई विविधता अपने चरमोत्कर्ष पर थी इसलिए मुक्तिबोध की काव्य भाषा का परिमार्जित समय 1950 से 1960 के बीच का है। मुक्तिबोध के काव्य की भाषा की पहचान उनके अनूठे प्रतीक जैसे बरगद, सांझ, लाल पदार्थ, गुफा इत्यादि हैं तो दूसरी तरफ बिम्ब, अलंकार, मुहावरे, छंद विधान, फैंटसी एवं शब्दों का विविधतापूर्ण प्रयोग काव्य भाषा जगत में उनकी विशिष्ट पहचान अंकित कराती है।

मूल शब्दः अस्मिता, आत्म संघर्ष, अँधेरा, अभिजात्य, फैंटसी, बिम्ब, त्वरा, आवेग, उबड़–खाबड़, मशाल, स्वप्न, नाटकीयता, पीतालोक, गुहांधकार, स्फुलिंग, लाल जाज्वल्यमान, लकड़ी का रावण, रक्तालोक, टीला, ब्रह्मराक्षस, बरगद, सांझ, उषाकाल, इमेज, मठ

प्रस्तावना
गजानन माधव मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य कवि हैं जिन्होंने छायावाद से अपनी काव्य रचना आरम्भ की तथा प्रगतिवाद, प्रयोगवाद व नई कविता से जुड़ते हुए ऐसी भाषिक अभिव्यक्ति के माध्यम से मनुष्य की अस्मिता व आत्मसंघर्ष को आवाज़ दी जो मनुष्य के मानस तल को छूकर वापिस लौट आती है तथा कविता सम्बन्धी नये टूलों का अन्वेषण करती है। उनका कोई भी स्वतंत्र काव्य संग्रह उनके जीवन काल में नहीं आया। भाषा का सम्बन्ध मूलत: कवि के अन्तर्जगत से होता है, मुक्तिबोध के काव्य की भाषा स्वतंत्र चेतना की संवाहक है। मुक्तिबोध कहते हैं– "कवि भाषा का निर्माण करता है, जो कवि भाषा का निर्माण करता है निस्सन्देह महान होता है।"
मुक्तिबोध कथ्य के आत्मसंघर्ष के समान अभिव्यक्ति के संघर्ष से जूझते रहे तथा उन्होंने पारम्परिक काव्य शैली, बिम्ब, काव्य भाषा को छोड़कर नया रास्ता अपनाया। इसके लिए मुक्तिबोध ने भाषा अभिजात्य को तोड़ा, फैण्टेसी का शिल्प अपनाया, प्रतीकों तथा बिम्बों को नया अर्थ दिया। इसके कारण मुक्तिबोध के यहाँ लम्बी कविता का शिल्प आया। मुक्तिबोध की भाषा में शब्दों की क्लिष्टता के साथ त्वरा, आवेग और ध्वन्यात्मकता मुक्तिबोध की काव्य भाषा के प्राण हैं। मुक्तिबोध की भाषा ने तत्सम, तद्भव, देशज एवं अंग्रेजी शब्दों द्वारा जीवन के अनेक क्षेत्र व्यापार, उद्योग, विज्ञान, राजनीति, दर्शन आदि का मंथन किया है। शब्द का भंडार समुद्र के समान है। ललित भाकुनी के अनुसार–

> "मुक्तिबोध की भाषा सागर की भाँति है जिसमें अनेक प्रकार के शब्दरूपी मोती निकलते हैं।" [2]

मुक्तिबोध के दृष्टिकोण की भाँति उनके शब्द भी स्वतंत्र हैं और यही शब्द मुक्तिबोध की भाषा तैयार करते हैं। उनकी भाषा पर उनकी स्वतंत्र चेतना परिलक्षित होती है। जगदीश गुप्त के अनुसार– "मुक्तिबोध ने अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप नायकों, प्रतीकों, बिम्बों की परिकल्पना करते हुए भाषा गढ़ी है।" [3], मुक्तिबोध के कथ्य और शिल्प की स्वतंत्रता निम्न पंक्तियों में मिलती है–

> "खुला खुला कमरा है, सांवली हवा है
> झांकते हैं खिड़की से अंधेरे में टंके हुए सितारे" [4]

अपने गढ़े हुए शब्दों के कारण मुक्तिबोध की काव्य भाषा को अनेक विद्वान आलोचक क्लिष्ट, दुरूह, अनगढ़, बेलगाम, आदि कहकर दरकिनार करने का प्रयास करते हैं। ऐसा ही कुछ नामवर सिंह कहते हैं– "शब्द चयन की दृष्टि से मुक्तिबोध की काव्य भाषा ऊबड़ है।" [5], रामस्वरूप चतुर्वेदी इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं– "मुक्तिबोध की भाषा ऊबड़–खाबड़ है।" [6], इस प्रकार मुक्तिबोध की भाषा को दोयम दर्जे का ठहराने की कोशिश की गई है लेकिन जिस प्रकार समुद्र के जल को खारा कहकर अलग नहीं कर सकते, उसी प्रकार मुक्तिबोध की काव्यभाषा को क्लिष्ट और दुरूह जैसे मुहावरों में बांटकर किसी चोरी की गठरी की तरह अलग नहीं कर सकते। उनकी भाषा की अपनी एक मजबूती है। वीरेंद्र सिंह के अनुसार– "शिल्प उर्वरा वस्तु है जो सबको दिखाई देती है परन्तु मुक्तिबोध की भाषा में आंतरिक बनावट और कसावट है।" [7]

नाटकीयता मुक्तिबोध की काव्य भाषा में प्रमुख तत्व है, इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमें 'अँधेरे में' कविता में मिलता है:

> "जंगलों से आती हुई हवा ने
> फूंक मारकर मशाल ही बुझा दी"

मुक्तिबोध भाषा चुनते नहीं बनाते हैं, अतः मुक्तिबोध की भाषा में अभिव्यक्ति का संघर्ष, भाषा की अभिजात्यता को तोड़ना, जटिल भाषा का प्रयोग, बहुआयामी एवं सर्जनात्मक भाषा, संवाद योजना तथा रहस्य से पुष्ट नाटकीयता का प्रयोग मिलता है जिसके कारण मुक्तिबोध की भाषा विद्रोह का स्वभाव अपनाये हुए है।
फैण्टेसी मुक्तिबोध की निजी उपलब्धि है, इसको 'स्वप्न कथा शैली' भी कहते हैं। इसके द्वारा मुक्तिबोध ने द्वंद्वात्मक समाज तथा व्यक्ति मन की प्रत्येक परत को खोल दिया है। फैण्टेसी की उत्पत्ति 'फैण्टेसिया' से हुई है जिसका अर्थ है मानव की मांग पर एक काल्पनिक दुनिया का निर्माण। फैण्टेसी कल्पना पर आधारित होती है, मुक्तिबोध इस पर कहते हैं– "फैंटेसी में मन की निगूढ़ वृत्तियों का, अनुभूत जीवित समस्याओं का, इच्छित विश्वासों और इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप होता है।" [8]
मुक्तिबोध फैण्टेसी का उपयोग सत्य की अभिव्यक्ति तथा सत्य की खोज के लिए करते हैं। मुक्तिबोध मानते हैं कि जीवन के वास्तविक अनुभव क्षणों को फैण्टेसी के माध्यम से ही कविता में

व्यक्त किया जा सकता है। 'अंधेरे में' कविता में कवि 'स्वप्न' फैंटसी का सहारा लेता है:

"समझ नहीं पाता कि चल रहा स्वप्न या जाग्रति शुरू है
दिया जल रहा है, पीतालोक प्रकाश में कल गल रहा है।"

"दिमागी गुहान्धकार का ओरांग उटांग" कविता में फैंटेसी शैली द्वारा नायक की स्वार्थ वृत्ति को प्रकट किया गया है–

"स्वप्न के भीतर एक स्वप्न, विचारधारा के भीतर और एक अन्य
सघन विचारधारा प्रच्छन्न"

मुक्तिबोध के प्रतीक उनके अर्थ के स्रोत हैं। मुक्तिबोध अंधकार के नहीं प्रकाश के कवि हैं:

"तब तुम्हे लगेगा अकस्मात् ले प्रतिमाओं का सार
स्फुलिंगों का समूह सबके मन का"

'अंधेरे में' कविता में लाल विचार संघर्ष के पक्ष में जाज्वल्यमान प्रतीक के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं–

"उस अन्धकार–भूमि से अजब
सौ लाल–लाल जाज्वल्यमान मणिगण निकले"

प्राकृतिक प्रतीकों में 'बरगद' कवि का प्रिय प्रतीक है। 'अंधेरे में' कविता में बरगद परम्परा बोध और विषादमय जीवन का प्रतीक है:

"भयंकर बरगद सभी उपेक्षितों, समस्त वंचितों गरीब का वही घर छत"

बिम्ब की दृष्टि से मुक्तिबोध समृद्ध हैं। डॉ. आलोक गुप्त के अनुसार– "मुक्तिबोध की कविता बिम्बमयी है तथा इसका अंतर गठन उनकी कविता में दिखाई देता है।" [10]
'अंधेरे में' कविता में मुक्तिबोध एक प्राकृतिक गुफा का बिम्ब ग्रहण करते हैं–

"भूमि की सतहों के बहुत–बहुत नीचे
अंधियारी, एकांत प्राकृतिक गुफा एक"

शमशेर के अनुसार– "मुक्तिबोध की हर इमेज के पीछे शक्ति होती है। वो हर वर्णन को दमदार बनाते हैं।" [9] अलंकारों का प्रयोग मुक्तिबोध के काव्य में समुचित मात्रा में हुआ है, जैसे अनुप्रास का उदाहरण:

"ओ, जीवन–मन के सुन्दर–सुन्दर समाधान, संतोष और संतुलन
रंग–बिरंगे कांच कंगनों से, सब छिन्न–भिन्न होंगे"

छंद योजना की दृष्टि से मुक्तिबोध की अधिकांश कविता अछंद है। निराला की भांति मुक्तिबोध ने छंद के बंधन तोड़े हैं:

"जिंदगी के
कमरों में अंधेरे लगाता है चक्कर
कोई लगातार"

निष्कर्ष

मुक्तिबोध ने काव्य भाषा को एक नया तेवर दिया। उनके लिए भाषागत अभिव्यक्ति जीवन की अभिव्यक्ति से भिन्न नहीं है। उन्होंने पुराने काव्य भाषागत पंखों को उखाड़ दिया तथा नये तत्वों का सृजन किया।

"अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने होंगे, उठाने ही होंगे
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब"

काव्य भाषा की अनगढ़ता के बावजूद उनकी भाषा अनुपम तथा अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय, आत्मनेपद, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, संस्करण १९६०, पृष्ठ संख्या ४२।
2. ललित भाकुनी, मुक्तिबोध की काव्य–भाषा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण २०१८, पृष्ठ संख्या ७४।
3. जगदीश गुप्त, नयी कविता: स्वरूप और समस्याएँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण १९६८, पृष्ठ संख्या १२०।
4. मुक्तिबोध, चाँद का मुँह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, २६वाँ संस्करण २०१७, पृष्ठ संख्या २२४।
5. नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण २००५, पृष्ठ संख्या १६५।
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण १९८६, पृष्ठ संख्या २३८।
7. वीरेंद्र सिंह, मुक्तिबोध: कविता और शिल्प, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण २०१२, पृष्ठ संख्या ६२।
8. मुक्तिबोध, एक साहित्यिक की डायरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, संस्करण २००४, पृष्ठ संख्या ५६।
9. शमशेर बहादुर सिंह, दोआब, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण १९९५, पृष्ठ संख्या ८४।
10. डॉ. आलोक गुप्त, आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण २०१०, पृष्ठ संख्या १०८।